(3)

ISSN 2249-5169 ₹ 25

वर्ष 8 अंक 2 नवम्बर 2011

समाज-धर्म

सामाजिक जागृति को समर्पित मासिक समाचार पत्रिका

समाज-धर्म अष्टम वर्ष प्रवेशोत्सव

बाल विशेषांक

बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल-पत्रकारिता का योगदान

- डॉ० शशिप्रभा जैन

बाल विशेषांक

पत्रकारिता समाज के विचारों का प्रतिबिंब होती है और साहित्य की संवाहिका है, जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाकर उसका निर्माण करती है। ग्रंथों में समाहित साहित्य से जो संभव नहीं था वह आज पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य ने साकार कर दिखाया है। पत्रकारिता रोज-रोज लिखा जाने वाला इतिहास है।

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य 'अन्यायों और बेईमानी का उद्घाटन कर, दोषों, कमियों, खामियों को उजागर करना, सलाह मशविरा देना और असहाय की सहायता करना और लोगों का मार्गदर्शन करना है।' इस तरह रहस्योद्घाटन पत्रकारिता की धड़कन बन जाता है, क्योंकि वे घटनाएँ जो घटती तो हैं, लेकिन जिन्हें कोई वर्ग व्यक्तिगत हितों के कारण छिपाना चाहता है, उन्हें भी पत्रकारिता उजागर करती है।

पत्रकारिता संप्रेषण का सामाजिक माध्यम है। इस वैज्ञानिक युग में पत्रकारिता जनता को घटनाओं के माध्यम से सचेत करती है और मनोरंजन भी करती है। पूरे समाज की समस्त घटनाओं को प्रतिबिम्बित कर यह स्वयं समाज से प्रभावित भी होता है और समाज को प्रभावित तो करता ही है। वास्तव में पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में सूचनाएँ और जानकारियाँ एकत्र करते हैं जिसे स्वयं के प्रयासों से जान नहीं सकते।

परिभाषाएँ- मानवीय- स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आकांक्षा, सामाजिक आदर्शों के लिए लाभ एवं समर्पण तथा विशाल विश्व में अपनी पहचान एवं अस्मिता को बनाए रखने की भावना का परिणाम ही पत्रकारिता है।

पत्रकारिता वह धर्म है, जिसका संबंध पत्रकार के उस कर्म से है- जिससे वह तत्कालिक घटनाओं का सबसे अधिक सही और निष्पक्ष विवरण पाठकों

के समक्ष उपस्थित करे।

- डॉ. भंवर खुराणा

टूटे दिलों को जोड़ना पत्रकारिता का सबसे बड़ा दायित्व होता है।

- भजनलाल, जनसत्ता, 26 दिसम्बर, 1992

पत्रकारिता का स्वरूप किस रूप में सामने आए, जिसके द्वारा वह अपने लक्ष्य तक पहुँच सके, इस दिशा में पत्रकारिता के कुछ शाश्वत धर्म ही उसके स्वरूप को उद्घाटित कर सकते हैं, जो इस प्रकार हैं-

दस धर्म:- सामाजिक चेतना का दर्पण, सूक्ष्म पर्यवेक्षण, नीर-क्षीर विवेक, मूल्यों की नियामिका, परिवेश के संपृक्ति, वैविध्यपूर्ण व्यापक क्षेत्र, समाज की सुधारवादी दृष्टि, संप्रेषण का माध्यम, प्रेरणा और जागरूकता, आधुनिक जीवन की दिशा निर्देशिका।

इन मूल्यों पर आधारित पत्रकारिता अभिव्यक्ति का सशक्त एवं लोकप्रिय साधन है क्योंकि यह समस्त बुनियादी मुद्दों को जनता के सामने बड़ी कलात्मकता से रखती है। यह कटु सत्यों का निर्भीकता से उद्घाटन करती हुई जनता को सूचित कर उनका मार्गदर्शन भी करती है। किसी भी प्रशासनिक प्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए पत्रकारिता का होना आवश्यक है।

समाचार पत्र एक सेवावृत्ति मिशन कार्य है। समाज की कुरीतियों, त्रुटियों एवं आडम्बर पूर्ण कार्यों का पर्दाफाश कर उन्हें सुधारने का दायित्व भी निभाता है। समाचार पत्र सरकार की नीतियों गतिविधियों एवं त्रुटियों को विश्लेषित करते हैं जिससे जनजीवन को पूर्णत: ज्ञात रहे कि सरकार किन नीतियों का अनुसरण कर रही है। यह सुधारों को सामने लाकर उन्हें विकसित करने का प्रयास करती है।

पत्रकारिता के विविध रूपों में से एक रूप है बाल पत्रकारिता।

बाल पत्रकारिता

बालक देश के दर्पण, राष्ट्र की मुस्कुराहट हैं। बालकों में वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोए जा सकते हैं। बालक में सम्यक् विकास के लिए बाल पत्रकारिता अत्यंत उपादेय है। बच्चों में अनन्त जिज्ञासा होती है, वे दुनिया के हर विषय के हर तथ्य को जानने हेतु लालायित रहते हैं। उनकी जिज्ञासा की शांति के लिए रंग-बिरंगे, मनोरंजक रूप में उन्हीं की भाषा में पत्र-पत्रिकाएं निकल रहीं हैं। वयस्क और वयोवृद्ध पत्रकार बालकों की रुचियों और उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप पत्र संपादित करते हैं। बाल पत्रों के पत्रकार को सर्वज्ञ और एक शुद्ध बालक होना पड़ता है। 'बाल सखा', 'शिशु', 'बालक', 'पराग',

र', 'चंदामामा' आदि पत्रों ने बच्चों तिविधियों पर प्रकाश डाला है।

"A book is a Guide, Friend and ilosopher." यह कथन बाल-रिताओं के लिए उपयुक्त है। काएं' एक ऐसी उत्तम अस्त्र हैं जो तों को सही दिशा दिखाती हैं। दुनिया क विषय उपलब्ध कराकर उन्हें त करती हैं। बच्चों का मस्तिष्क एक खाता', के समान होता है। वह जो ी सीख लेता है उसे अपने जीवन में ो है। बढ़ते बच्चों में इस प्रक्रिया कास करना बहुत जरूरी है और ानकारी समय-समय पर देना भी यक है। इस कार्य के लिए बाल रिता अपनी सर्वश्रेष्ठ भूमिका ो है।

ाएं क्यों पढ़ते हैं बालक ?

ालक पत्रिका को आनंद और न के लिए पढ़ता है। वह ऐसी पढ़ना चाहता है, जो दिमाग पर बने बल्कि उसकी बोरियत कम त्रिका को कहीं भी पढ़ा जा सकता अपनी सुविधानुसार भी पढ़ सकता

ों का विकास

ाध्यम से लाभ

न, सूचना, शिक्षा और क ज्ञान एवं व्यक्तित्व का विकास बालकों का सर्वांगीण विकास होता है। पत्रिकाएं उनका सामान्य ज्ञान बढ़ाती हैं। विविध प्रकार की शिक्षाएँ प्रदान करती हैं जैसे- पहेलियां, खेल-क्रियाएँ, कागज़ की कलाकृतियाँ आदि नीतियों की जानकारियाँ बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं। ये विचारों का आदान-प्रदान कराती हैं। बौद्धिक और शारीरिक विकास में अपना व्यापक रूप निभाती हैं। विविध चित्रों से इनका मन जीत लेती हैं। बालक नए शब्द विचार और भाव भी सीखते हैं। कहानियों से नए अनुभव सीख लेते हैं। शिल्प-कला, वैज्ञानिक क्रियाएँ, क्रियात्मक खेल और अनेक क्रिया-कलाप से उनके शारीरिक और भावात्मक विकास में पत्रिकाएँ सराहनीय भूमिका निभाती है। अत: स्पष्ट है कि जनसंचार माध्यम बालकों के विकास में सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाते हैं।

आज के बालक कल के नागरिक हैं। इनका संपूर्ण विकास करना अत्यंत आवश्यक है। बालकों को शिक्षित करना, दिशा देना, उनकी रुचियों को परिष्कृत करना और उनका विकास करना बाल साहित्य का उद्देश्य होता है। बाल पत्रकारिता निर्क्षरता हटाने, सामाजिक कुरीतियाँ मिटाने, अंधविश्वास दूर करने तथा विश्वभर में भाई-चारा बढ़ाने में उपयोगी है। बच्चे गंभीर और उत्सुक

पाठक होते हैं। इसलिए जिम्मेदारी दुगनी बढ़ जाती है कि किस तरह के चित्र और सामग्री का प्रयोग किया जाए।

भारत की बाल-पत्रकारिता में ज्यादातर पश्चिमी संस्कृति पर बल दिया जाता है। इससे बालक भारत की संस्कृति से अपरिचित ही रह जाएगा। इसमें सुधार लाना चाहिए। बाल पत्रकारिता में कम लेखक पाए जाते हैं। सरकार को वरीयता देनी चाहिए। इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय संपत्ति संरक्षण, अपनी संस्कृति तथा अन्य उदात्त विचारों के अंकुर रोपने के लिए बाल-पत्रिकाओं को वरीयता दें।

श्रम ही से सब मिलता है।
बिनु श्रम मिलै न काहि॥

अत: हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हमें अपने वर्तमान और भविष्य को स्वर्णिम और सुखमय बनाना चाहिए जिससे हमारा देश संसार में आदर्श बन सके। बालक की उन्नति ही समाज और देश की उन्नति है।

- असोसियेट प्रोफेसर
- डी-204, शांतम अपार्टमैन्ट्स, तुडियलूर, कोयम्बत्तूर

कविवर छन्दराज 'पारदर्शी' का देहदान

कालजयी विश्व कीर्तिमान निर्माता, छन्दराज कविवर श्री ओमप्रकाश डाँगी 'पारदर्शी' जी का स्वर्गवास शरद पूर्णिमा दिनांक 12 अक्तूबर, 2011 को हो गया। 71 वर्षीय श्री पारदर्शी की पार्थिव देह संकल्पानुसार आर०एन०टी० मेडिकल कॉलेज, उदयपुर में वहाँ अध्ययनरत शोधार्थियों के चिकित्सा अनुसंधान के लिए शोकाकुल स्वजनों एवं सैंकड़ों परिचितों की उपस्थिति में समर्पित की गई।

कविवर पारदर्शी पिछले दो माह से अस्वस्थ चल रहे थे तथा अस्वस्था के बावजूद भी आपका सृजन अनवरत गतिमान था और आप भगवान महावीर पर खण्डकाव्य लेखन में रथ थे।

गुरुवार को आयोजित शोक सभा में साहित्य जगत की विरल विभूति के महाप्रयाण पर देश एवं विदेश के धर्माचार्यों, गुरु भगवंतों, साहित्यकारों, कवियों, श्रेष्ठीजनों, समाज प्रमुखों, श्रीसंघों, संस्थाओं आदि ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए शब्द-सुमन द्वारा श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए आपके वियोग को साहित्य-जगत की अपूरणीय क्षति बताया।